

हिंदी सिनेमा में कई ऐसे कलाकार रहे, जिन्होंने सीमित अवसरों के बावजूद अपनी अदाकारी और प्रतिभा से अमिट छाप छोड़ी। विनीता भट्ट उर्फ यास्मीन और नृत्यांगना शीला वाज इसी परंपरा की दो महत्वपूर्ण कड़ियां हैं। यास्मीन ने 'मिस्टर एंड मिसेज 55' जैसे गीतों में अपनी चंचलता से दर्शकों को आकर्षित किया, वहीं शीला वाज ने 'रमेया वस्तावैया' जैसे गीतों में अपने नृत्य से यादगार पहचान बनाई। भले ही इन्हें मुख्यधारा में लंबा समय न मिला हो, लेकिन इनकी स्क्रीन उपस्थिति और कलात्मक योगदान ने इन्हें सिनेमा प्रेमियों के बीच आज भी जीवित बनाए रखा है।

विनीता भट्ट, जिन्हें यास्मीन के नाम से भी जाना जाता है, 1950 के दशक में भारतीय सिनेमा में एक छोटी, लेकिन यादगार पहचान थीं, जिन्हें 'मिस्टर एंड मिसेज 55' (1955) और 'ऊपटंग' (1955) जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। उनकी विरासत कुछ यादगार रोलस पर टिकी है, खासकर 'जॉनी वॉकर के साथ मजेदार 'जाने कहां मेरा जिगर गया जी' गीत, जिसने यास्मीन की शोख अदाओं और आकर्षक अंदाज को क्लासिक बॉलीवुड के शौकीनों के बीच आज भी जिंदा रखा है।

विनीता भट्ट (यास्मीन) का जन्म 3 अप्रैल, 1937 को रावलीपिंडी में हिंदू-अंग्रेज माता-पिता के यहां हुआ था। उन्होंने हिल-स्टेशन स्कूलों में पढ़ाई की और बैंगलोर में अपना सीनियर कैम्ब्रिज पूरा किया। वे बैंगलोर एमेच्योर ड्रामेटिक सोसाइटी में शामिल हुईं और टैगोर के बलिदान और जे. बी. प्रीस्टली जैसे नाटकों में काम किया, शायद यहीं उनके एक महान अदाकार बनाने का अंकुर फूटा। मशहूर फिल्म निर्माता, निर्देशक गुरुदत्त ने उन्हें देखा और अपनी अगली फिल्म में रोल ऑफर किया और उनसे बॉम्बे आने को कहा। कुछ वजहों से, उन्होंने यह ऑफर एक्सेप्ट नहीं किया। बाद में विनीता बॉम्बे गईं, जहां उनकी मुलाकात

एक्ट्रेस नरगिस के भाई अनवर हुसैन से हुई। विनीता का परिवार अनवर हुसैन को जानता था। क्योंकि विनीता बहुत खूबसूरत थीं, इसलिए अनवर



डॉ. मीता गुप्ता
साहित्यकार

हुसैन ने उन्हें रंजीत स्टूडियो के मालिक चंद्रलाल शाह से मिलवाया, जिन्होंने उन्हें फिल्म 'ऊपटंग' (1955) में एक छोटा सा रोल दिया। फिल्म की शूटिंग मशहूर महबूब स्टूडियो में हुई थी। गुरु दत्त भी वहीं शूटिंग कर रहे थे। दोनों रैस्ट पीरियड में मिले। फिर से गुरु दत्त ने उन्हें अपनी फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज 55' में रोल ऑफर किया। इस बार वे मना नहीं कर सकीं और ऑफर एक्सेप्ट कर लिया।

बहुत ही खूबसूरत और चार्मिंग यास्मीन को गुरुदत्त ने अपनी सुपरहिट फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज 55' में जॉनी वॉकर के साथ साइड हीरोइन के तौर पर चुना था। गुरुदत्त ने फिल्म मिस्टर एंड मिसेज 55 के लिए विनीता का नाम बदलकर यास्मीन कर दिया था। पॉपुलर गाना 'जाने कहां मेरा जिगर गया जी' यास्मीन और जॉनी वॉकर पर फिल्माया गया। उस समय फिल्ममयान की सिनेमास्कोप और टेक्नीकलर फिल्म 'श्री हेडेड कोबरा' आई थी, जिसका पहले नाम 'बॉम्बे फ्लाइट 417' था। विनीता भट्ट ने इस फिल्म में रुक्मिणी का रोल किया था, जिसके मेकअप में जिमी वाइनिंग थे। दोनों को प्यार हो गया। अपनी अच्छी शुरुआत, जिनमें रुस्तम सोहराब, कैप्टन किशोर जैसी फिल्मों के बावजूद, विनीता भट्ट फिल्मों में ज्यादा दिन नहीं टिकीं और पॉपुलर मेकअप में जिमी वाइनिंग से शादी कर ली और बॉलीवुड छोड़कर विदेश में बस गईं। आज भी वे बॉलीवुड के इतिहास में पुरानी यादों की एक मिसाल बनी हुई हैं। एक ऐसी एक्ट्रेस जो थोड़े समय के लिए चमकीं, लेकिन अपनी जिंदादिल स्क्रीन प्रेजेंस से एक गहरी छाप छोड़ गईं।

बॉलीवुड की वो अदाकाराएं जो यादों में हैं जिंदा

बेजोड़ नृत्यांगना शीला

अपनी नृत्य भूमिकाओं से सबको प्रभावित करने वाली शीला वाज ने हिंदी फिल्मों में डांसर के रूप में काम किया। उनका परिवार गोवा से था और उनका जन्म 1934 में हुआ था और वे दादर, मुंबई में पली-बढ़ीं। उन्होंने छोटी उम्र से ही डांस सीखा था, लेकिन जब उन्होंने फिल्मों में आना चाहा, तो उन्हें अपने परिवार से बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। किशोर साहू की म्यूव पंख (1954) और किदार शर्मा की गुनाह (1953) के साथ, उन्होंने 1960 तक बहुत सारी फिल्मों में डांस किया। उनकी कुछ महत्वपूर्ण फिल्मों में श्री 420 (1955) शामिल है, जिसमें उन्होंने न केवल रमेया वस्तावैया (उनका अब तक का सबसे प्रसिद्ध गीत) पर यादगार नृत्य किया, बल्कि दिल का हाल सुने दिलवाला, सीआईडी (1956), जॉनी वॉकर (1957), तुमसा नहीं देखा (1957), मिस्टर एक्स (1957), सीलावा साल (1958), कागज के फूल (1959) और बहना (1960) में भी नृत्य किया।



बहुत से लोग उन्हें नाम से नहीं जानते, क्योंकि उन दिनों डांसर्स के नाम हमेशा फिल्म क्रेडिट्स में नहीं आते थे, लेकिन इससे हर गाने को खास बनाने के लिए इन डांसर्स के योगदान या कड़ी मेहनत को कम नहीं किया जा सकता। शीला वाज कई मशहूर गानों से जुड़ी हुई हैं और इन गानों से जुड़ने के उनके हेमारे को याद करना है, तो रमेया वस्तावैया को मिस नहीं किया जा सकता। मशहूर जोहरा सहगल का कोरियोग्राफि का हुआ यह गाना वहीं सी फेस में शूट किया गया था, उस समय उस जगह पर ऊंची इमारतें और कमर्शियल कॉम्प्लेक्स नहीं थे। आज का बॉम्बे-वर्ली सी लिंक उसी जगह पर बना है। गाने में उनकी एक मिनट की स्क्रीन प्रेजेंस के बावजूद, कोई उनके एक्स्पोज़न और परफॉर्मंस को नहीं भूल सकता। लंके पहला-पहला प्यार में भी, देव आनंद और शशीला के साथ स्क्रीन शेयर करने के बावजूद, शीला सबसे अलग दिखती हैं। यहां तक कि यूट्यूब वीडियो के कमेंट सेक्शन में भी लोग उनकी तारीफ कर रहे हैं और बता रहे हैं कि कैसे मोहम्मद रफी, शमशाद बेगम और आशा भोसले का गाना उनके डांस से अमर हो गया। बॉलीवुड की हिंदी-केंद्रित फिल्ममेंकिंग की वजह से, शीला वाज को नुकसान हुआ-उन्हें यह भाषा नहीं आती थी। इसलिए, उनके डांस के लिए, उन्हें रोमान रिक्कार्ड में लिखे लिखिक्स दिए जाते थे। उन्होंने लगभग



70 फिल्मों में काम किया। शुरुआत शोखियां (1951) में बैकग्राउंड डांसर के तौर पर उनके काम से हुई, और फिर मां (1952) में एक पूरा नंबर किया। 1961 में बॉलीवुड छोड़ने और अपना नाम बदलकर राम लखनपाल रखने के बावजूद, शीला को इंडस्ट्री में अपने समय को याद करना बहुत पसंद था। 2009 में उनका इंटरव्यू लेने वाले फिल्म मेकर कर्ण बाली लिखते हैं, "उनका चेहरा खिल उठा, जब उन्होंने हमें बताया कि आज भी जब उनके गाने टीवी पर दिखाए जाते हैं, तो रंगस्टर्स और पड़ोसी उनके पास आते हैं और बताते हैं कि उन्हें उनके डांस कितने पसंद आए।" इस महान अदाकारा का देहांत 29 जून 2022 को हुआ, किंतु उनके नृत्य ने उन्हें अमर बना दिया। हिंदी फिल्मों के दो गानों में अभिनय करने वाली हीरोइनें अपनी शानदार अदाकारी से अमर हो गईं। उन्होंने बाद में कोई बड़ी फिल्म तो नहीं की, लेकिन सिर्फ इन गानों की वजह से वह जानी जाती हैं।

पॉप गॉडसेस नाजिया हसन

जिंदगी का सफर



नाजिया हसन दक्षिण एशिया की सबसे लोकप्रिय और यादगार गायिकाओं में से एक थीं। उन्हें अक्सर "क्वीन ऑफ पॉप" और उपमहाद्वीप की पहली पॉप स्टार कहा जाता है। बहुत कम उम्र में उन्होंने ऐसा मुकाम हासिल किया, जो बड़े-बड़े कलाकार भी नहीं कर पाते। उनकी मधुर आवाज, आधुनिक अंदाज और अलग पहचान ने भारत, पाकिस्तान और दुनिया भर के संगीत प्रेमियों के दिलों में खास जगह बनाई। नाजिया हसन केवल एक गायिका ही नहीं थीं, बल्कि एक संवेदनशील, शिक्षित और समाजसेवी व्यक्तित्व भी थीं।

जन्म और प्रारंभिक जीवन
नाजिया हसन का जन्म 3 अप्रैल 1965 को कराची, पाकिस्तान में हुआ था। उनका परिवार शिक्षित और संस्कारी था। बचपन से ही उनमें कला और संगीत के प्रति रुचि दिखाई देने लगी थी। वे अपने भाई जोहेब हसन के साथ बहुत करीब थीं और आगे चलकर यही भाई-बहन का रिश्ता संगीत जगत में बेहद मशहूर हुई। नाजिया की परिवारश



नूर हिना खान
लेखिका

पाकिस्तान और लंदन दोनों वातावरणों में हुई, जिससे उनके व्यक्तित्व में आधुनिकता और गहराई दोनों आईं। **गायन करियर की शुरुआत**
नाजिया हसन ने बहुत कम उम्र में गायन की दुनिया में कदम रखा। उनका सबसे बड़ा ब्रेक तब मिला जब उन्होंने 1980 में भारतीय फिल्म कुर्बानी के लिए मशहूर गीत "आप जैसा कोई" गाया। उस समय उनकी उम्र केवल 15 वर्ष थी। यह गीत रिलीज होते ही सुपरहिट हो गया और नाजिया रातों-रात स्टार बन गईं। इसी गाने के लिए उन्होंने 1981 में Filmfare Award for Best Female Playback Singer जीता। वे यह सम्मान पाने वाली पहली पाकिस्तानी गायिका और बहुत कम उम्र में यह पुरस्कार जीतने वाली कलाकारों में शामिल रहीं।

लोकप्रियता और सुपरहिट एल्बम
नाजिया हसन की लोकप्रियता सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं रही। 1981 में उनका प्रसिद्ध एल्बम "Disco Deewane" रिलीज हुआ, जिसने पूरे एशिया में तहलका मचा दिया। यह एल्बम बहुत बड़ी सफलता साबित हुआ और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। इसके बाद उन्होंने अपने भाई जोहेब हसन के साथ मिलकर कई हिट एल्बम दिए, जैसे: Disco Deewane (1981) Boom Boom (1982) Young Tarang (1984) Hotline (1987) Camera Camera (1992) उनके गाने जैसे "डिस्को दीवाने", "बूम बूम", "दम दम देदे" और "आंखें मिलाने वाले" आज भी बेहद पसंद किए जाते हैं। उन्होंने पॉप संगीत को एक नया रूप दिया और युवा पीढ़ी की आइकन बन गईं।

एक तरफ कई लोग
धुरंधर-2 में फिल्म की कास्टिंग, बैकग्राउंड म्यूजिक, डारेकशन और रणवीर सिंह के अभिनय की की प्रशंसा कर रहे हैं तो दूसरी तरफ कई लोग इस फिल्म को भाजपा सरकार की प्रशंसा का प्रोगेंडा बता रहे हैं। हालांकि इस फिल्म में सीधे-तौर पर किसी राजनेता या अन्य व्यक्तित्व को चित्रित किया गया है, लेकिन इस चालाकी समझ भी लेते हैं। फिल्म के शुरू में ही यह बता दिया जाता है कि इस फिल्म के सभी पात्र काल्पनिक हैं, लेकिन काल्पनिक पात्र दरअसल काल्पनिक नहीं हैं। दरअसल अहमद बाजर फिल्म बनाने वालों से न जाने क्या-क्या करा देता है। इस प्रक्रिया में कई स्तरों पर राजनीति की भूमिका भी होती है।

पढ़ाई और सामाजिक कार्य
नाजिया हसन सिर्फ एक सफल गायिका ही नहीं थीं, बल्कि वे पढ़ाई में भी अच्छी थीं। उन्होंने कानून (Law) की पढ़ाई की और बाद में सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहीं। वे बच्चों, महिलाओं और गरीबों के लिए काम करती थीं। वे कई सामाजिक संगठनों से जुड़ीं और समाज में जागरूकता फैलाने का प्रयास करती रहीं। उनके व्यक्तित्व की यही बात उन्हें और भी खास बनाती है कि शोहरत मिलने के बाद भी वे जमीन से जुड़ी रहीं।

ओटीटी

चिरैया

"चिरैया" Chirayya एक ऐसी फिल्म है, जो मनोरंजन से अधिक आपको सोचने पर मजबूर करती है। डिजी+ हॉटस्टार पर रिलीज इस फिल्म का मुख्य विषय मैरिटल रेप जैसा संवेदनशील और विवादित मुद्दा है, जिस पर भारत में अब भी स्पष्ट कानून नहीं है। फिल्म एक शादीशुदा जोड़े के रिश्ते के जरिए यह सवाल उठाती है कि क्या शादी के बाद भी महिला की इच्छा और सहमति का महत्व बना रहता है। विषय निरस्यदेह गंभीर है, लेकिन फिल्म का ट्रीटमेंट कमजोर प्रतीत होता है। किरदारों की प्रस्तुति कई जगह अस्वाभाविक लगती है, जिससे दर्शक उनसे जुड़ नहीं पाते। फिल्म में पितृसत्ता, फेमिनिज्म और LGBTQ जैसे मुद्दों को भी छूने की कोशिश की गई है, लेकिन इनका चित्रण कई बार एक्टररफा और अतिरंजित लगता है। इससे कहानी का संतुलन बिगड़ता है और संदेश स्पष्ट नहीं हो पाता। तकनीकी पक्ष की बात करें, तो एडिटिंग सबसे बड़ी कमजोरी बनकर सामने आती है। सीन का पल्लो टूटता है और कई जगह घटनाक्रम समझना मुश्किल हो जाता है। निर्देशन, बैकग्राउंड म्यूजिक और स्क्रीनप्ले भी प्रभाव छोड़ने में असफल रहते हैं। क्लाइमैक्स भी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता। जहां संवाद और पारिवारिक हस्तक्षेप से समाधान की उम्मीद होती है, वहां फिल्म दहेज कानून जैसे मुद्दों को जोड़कर कहानी को उलझा देती है। हालांकि यह फिल्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक बहस जरूर शुरू करती है और दर्शकों को असहज, क्रोधित और विचारशील बनाती है, लेकिन एक प्रभावशाली फिल्म बनने के लिए सिर्फ विषय का बड़ा होना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसका संतुलित और सशक्त प्रस्तुतीकरण भी आवश्यक है। कुल मिलाकर, "चिरैया" एक जरूरी मुद्दा उठाती है, पर एक मजबूत फिल्म नहीं बन पाती।

समीक्षक-पंकज मुद्गल

हर सूट के साथ परफेक्ट इयररिंग्स से दिखें आकर्षक

इयररिंग्स का अपना अलग ही महत्व है। सही इयररिंग्स न केवल आपके लुक को संपूर्ण बनाते हैं, बल्कि आपकी पर्सनेलिटी में भी आकर्षण जोड़ते हैं। आज के समय में बाजार में इयररिंग्स के अनेक डिजाइन उपलब्ध हैं, जिन्हें आप चाहें तो खुद बनाकर भी उपयोग कर सकती हैं या फिर इन्हें बेचकर अच्छी आमदनी का साधन भी बना सकती हैं। झुमका, चांदबाली, स्टड, हूप्स और लॉन्ग इयररिंग्स जैसे कई विकल्प सूट के साथ बेहद आकर्षक लगते हैं और हर मौसम में इनकी मांग बनी रहती है।

- **झुमका इयररिंग**- यह पारंपरिक और सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला डिजाइन है। सिल्क, कॉटन या पार्टी वियर सूट के साथ यह बेहद खूबसूरत लगता है। मोती, बीड्स और धातु से इसे बनाकर बेचना भी आसान है।
- **चांदबाली इयररिंग**- मुगलकालीन शैली से प्रेरित यह डिजाइन खासकर शादी और त्योहारों में पहना जाता है। इसकी लोकप्रियता हमेशा बनी रहती है, जिससे यह एक अच्छा



बिजनेस विकल्प बन सकता है।
■ **स्टड इयररिंग**-छोटे और साधारण स्टड रोजमर्रा के उपयोग के लिए उपयुक्त होते हैं। पलं, स्टोय या मिमर वर्क से तैयार किए गए स्टड की अच्छी विक्री होती है।
■ **ऑक्सिडाइज्ड इयररिंग**- ये आजकल ट्रेंड में हैं और कॉटन व इंडो-वेस्टर्न सूट के साथ काफी स्टाइलिश लगते हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर इनकी अच्छी डिमांड है।
■ **टसल इयररिंग**- रंग-बिरंगे धागों से बने ये इयररिंग युवतियों के बीच काफी लोकप्रिय हैं और कैजुअल लुक को खास बना देते हैं।

राष्ट्रवाद की चाशनी में लिपटी धुरंधर-2 पर उठे सवाल

इस दौर में राष्ट्रवाद की चाशनी में लपेटकर बनाई जा रही फिल्में क्या वास्तव में जनता के अंदर राष्ट्रवाद पैदा करना चाहती हैं या फिर ऐसी फिल्में किसी राजनीतिक एजेंडे के तहत बनाई जाती हैं? क्या इन दिनों राष्ट्रवाद भुनाने के लिए फिल्में बनाई जा रही हैं? क्या इन दिनों राष्ट्रवाद को एक फार्मुला बना दिया गया है? क्या इन दिनों फिल्मों के माध्यम से राष्ट्रवाद को बेचा जा रहा है? क्या ऐसी फिल्मों के माध्यम से सच्चे अर्थों में जनता के अंदर राष्ट्रवाद पैदा हो सकता है? सवाल कई हैं लेकिन ऐसी जनता, जिनकी आंखों पर पर्दा पड़ा है, वह न ही तो इन सवालों के उत्तर जानता चाहती है और न ही वह ऐसी फिल्मों के पीछे लगे दिमाग को पढ़ पाती है। इन दिनों फिल्म 'धुरंधर : द रिवेंज' चर्चा में है।

फिल्म धुरंधर-2 विवादों में आ गई है। अनेक लोग इस फिल्म को देश की एक बड़ी हकीकत मान रहे हैं, तो कई लोग इसे प्रोपेगेंडा फिल्म मान रहे हैं। यह फिल्म निर्देशक आदित्य धर की चर्चित एक्शन फिल्म धुरंधर का दूसरा भाग है। इस फिल्म की कहानी कराची के लियारी इलाके की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। फिल्म में अंडरवर्ल्ड और खूफिया क्रियाकलापों के संसार को दिखाया गया है। इस फिल्म में कई घटनाओं के संदर्भ भी हैं जैसे कंधार हाईजैक, भारतीय संसद पर हमला और 2008 का मुंबई हमला। इस फिल्म में मुख्य भूमिका रणवीर सिंह ने निभाई है। इसके साथ ही अजुन रामपाल, आर माधवन, संजय दत्त, राकेश बेदी जैसे कलाकारों ने भी फिल्म में काम किया है। तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव से पहले इस फिल्म पर रोक लगाने की मांग को लेकर मद्रास हाईकोर्ट में याचिका दायर करने की तैयारी की जा रही है। याचिकाकर्ता का कहना है कि चुनाव से ठीक पहले इस तरह की फिल्म का प्रदर्शन आचार संहिता के उल्लंघन की आशंका पैदा करता है। आदित्य धर के निर्देशन में बनी फिल्म धुरंधर-2 सिनेमाघरों



रोहित कोशिक
वरिष्ठ पत्रकार

में 19 मार्च को रिलीज हुई थी। बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन करने वाली यह फिल्म अब विवादों में आ गई है। अब इस फिल्म पर गुरबानी का अपमान करने और सिख भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप भी लग रहा है। आरोप है कि फिल्म के एक दृश्य में गुरबानी के एक पवित्र श्लोक का अनुचित प्रयोग किया गया है। साथ ही एक दृश्य में रणवीर सिंह को बड़ी हुई दाढ़ी, हाथ में कड़ा और पगड़ी पहने हुए दिखाया गया है। आरोप है कि इस दृश्य और लुक से सिखों और गुरु गोविंद सिंह का अपमान हुआ है। इस मुद्दे पर 'सिख इन महाराष्ट्र' संगठन के अध्यक्ष सरकार गुरज्योत सिंह ने फिल्म निर्माताओं से माफी मांगने की मांग की है। हालांकि इस आपत्ति के बाद आर माधवन ने माफी मांगी है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने इस फिल्म के जरिए दूसरों दलों को बदनाम करने का आरोप लगाया है। इस फिल्म में अतीक अहमद की तरह दिखते एक चरित्र के पाकिस्तानी खूफिया एजेंसी आईएसएआई और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के साथ संबंधों को दिखाया



के बारे में कुछ नहीं दिखाया गया है, लेकिन चर्चा शुरू हो गई है। निश्चित रूप से अतीक अहमद कोई संत नहीं था। वह अपराधी था, लेकिन उस अपराधी को पाकिस्तान से जोड़ना संदेह पैदा करता है। सवाल यह है कि यदि अतीक अहमद के काफी सालों से पाकिस्तान से संबंध थे और वह वहां से हथियार ले रहा था तो सरकारें क्या कर रही थीं? एक तरफ कई लोग धुरंधर-2 में फिल्म की कास्टिंग, बैकग्राउंड म्यूजिक, डारेकशन और रणवीर सिंह के अभिनय की की प्रशंसा कर रहे हैं तो दूसरी तरफ कई लोग इस फिल्म को भाजपा सरकार की प्रशंसा का प्रोगेंडा बता रहे हैं। हालांकि इस फिल्म में सीधे-तौर पर किसी राजनेता या अन्य व्यक्तित्व को चित्रित किया गया है, लेकिन इस चालाकी समझ भी लेते हैं। फिल्म के शुरू में ही यह बता दिया जाता है कि इस फिल्म के सभी पात्र काल्पनिक हैं, लेकिन काल्पनिक पात्र दरअसल काल्पनिक नहीं हैं। दरअसल अहमद बाजर फिल्म बनाने वालों से न जाने क्या-क्या करा देता है। इस प्रक्रिया में कई स्तरों पर राजनीति की भूमिका भी होती है।

एनिवर्सरी (2026)

एनिवर्सरी एक पॉलिटिकल थ्रिलर के रूप में प्रस्तुत की गई फिल्म है, लेकिन उच्च रेटिंग और आकर्षक नाम के बावजूद यह दर्शकों को भ्रमित कर सकती है। कहानी एक युनिवर्सिटी प्रोफेसर और उसके होटलियर पति के सुखी परिवार से शुरू होती है। उनकी शादी की सालगिरह पर बेटा अपनी मंगतर से मिलवाता है, जो कभी उसकी मां की छात्रा रह चुकी होती है। धीरे-धीरे खुलासा होता है कि यह युवती बेहद क्रांतिकारी विचारधारा की समर्थक रही है, जिसे जनतंत्र विरोधी गतिविधियों के कारण विधवाविद्यालय से निकाल दिया गया था और इसमें मां की भी भूमिका थी। संघर्ष तब गहराता है, जब उस युवती की लिखी किताब "The Change" लोकप्रिय हो जाती है और उसके विचार समाज में व्यापक राजनीतिक परिवर्तन की लहर पैदा करते हैं। मां, जो यथार्थवादी सोच रखती है, इस बदलाव को स्वीकार नहीं कर पाती और परिवार के भीतर वैचारिक टकराव तेज हो जाता है। फिल्म राजनीति, विचारधाराओं के टकराव और उनके पारिवारिक रिश्तों पर पड़ने वाले प्रभाव को दिखाने की कोशिश करती है। यह भी दर्शाती है कि उम्र, जड़ता, भावनात्मक जुड़ाव और मानसिक द्वंद किस तरह व्यक्ति की सोच को प्रभावित करते हैं। हालांकि फिल्म एक डिस्टोपियन (काल्पनिक) परिवेश में आधारित है, जहां पात्र और उनका व्यवहार काफी असामान्य और अतिरंजित प्रतीत होता है। कई स्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाएं अप्रत्याशित लगती हैं, जिससे कहानी से जुड़ाव कमजोर हो जाता है। कुल मिलाकर, एनिवर्सरी (2026) एक गंभीर विषय उठाती है, लेकिन उसकी प्रस्तुति अपनी प्रभावशाली नहीं बन पाती। यह फिल्म यह भी याद दिलाती है कि रेटिंग हमेशा किसी फिल्म की वास्तविक गुणवत्ता का सही पैमाना नहीं होती।

समीक्षक-ब्रज राज नारायण सक्सेना